ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 40 | 21 से 27 जनवरी, 2016 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 पौ. शु. 11

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, वैदिक विरक्त मण्डल एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

जन-चेतना यात्रा की तैयारी के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का

16 से 19 जनवरी, 2016 तक राजस्थान के विभिन्न नगरों का तूफानी दौरा

जयपुर, अलवर, सीकर, झुंझुनू, चिड़ावा एवं पिलानी में किया गया सघन जन-सम्पर्क

नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, गौहत्या, पाखण्ड, अश्लीलता, गलत शिक्षा नीति एवं किसानों की समस्याओं को लेकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चलाये जा रहे जन-चेतना अभियान का राजस्थान में 15 से 22 जनवरी, 2016 तक प्रायोजित कार्यक्रम खराब मौसम के कारण स्थगित किये जाने के पश्चात् सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आचार्य सन्तराम जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री हवा सिंह आर्य एडवोकेट, कोषाध्यक्ष डॉ. बलदेवराज आर्य, आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर के उपप्रधान श्री मनोहर लाल सतीजा, श्री रामस्वरूप मीणा, श्री देवेन्द्र त्यागी तथा श्री रणवीर जांगण को साथ लेकर राजस्थान के जयपुर, अलवर, सीकर, झुंझुनू एवं चुरू आदि जिलों का तूफानी दौरा किया। अपने इस दौरे में स्वामी आर्यवेश जी एवं समस्त आर्य नेताओं ने सभी जिलों के प्रमुख आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा अन्य संस्थाओं के सक्रिय पदाधिकारियों से सम्पर्क कर आगामी मई मास में आयोजित किये जाने वाले जन-चेतना अभियान में सहयोग देने का आह्वान किया।

16 जनवरी, 2016 को प्रातः 11 बजे से मध्यान्ह दो बजे तक आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर के विशाल सभागार में उपस्थित सैकड़ों गणमान्य महानुभावों को सम्बोधित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी एवं सत्यव्रत सामवेदी जी ने जन-चेतना यात्रा के प्रमुख मुद्दों पर प्रकाश डाला और तन-मन-धन से सहयोग देने की अपील की। इस कार्यक्रम का मंच संचालन यात्रा के सहसंयोजक श्री चक्रकीर्ति सामवेदी जी ने किया। पत्रकार वार्ता करने के उपरान्त नेताओं का कारवां अलवर के लिए रवाना हो गया और 16 जनवरी, 2016 की रात 8 बजे आर्य कन्या विद्या मंदिर अलवर में वहां के पदाधिकारियों ने सुस्वादु भोजन तथा आवास की व्यवस्था कर सुन्दर आतिथ्य किया। अलवर के सुप्रसिद्ध आर्यनेता स्व. श्री छोटू सिंह आर्य एडवोकेट के योग्य सुपुत्र श्री प्रदीप आर्य के कुशल नेतृत्व में संचालित लगभग 14 शिक्षण संस्थाओं एवं आर्य समाजों का संचालन हो रहा है जिसमें हजारों छात्र-छात्राएँ एवं अन्य आर्यजन जुड़े हुए हैं। 17 जनवरी, 2016 को मंकर संक्रांति के उपलक्ष्य में आयोजित पंचकुण्डीय विशेष यज्ञ के भव्य आयोजन में प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक स्वामी आर्यवेश जी एवं श्री सत्यव्रत सामवेदी जी, श्री अमर मुनि वानप्रस्थ के प्रवचन और उसके पश्चात् कार्यकर्ताओं की संगोष्ठी आयोजित की गई। यह गोष्ठी नव-निर्मित पं. हेतराम सभागार में आयोजित की गई थी। संगोष्ठी में बड़े उत्साह के साथ कार्यकर्ताओं ने अपने सुझाव रखे और मई मास में प्रायोजित जन-चेतना यात्रा को एक ऐतिहासिक यात्रा के रूप में करने का आश्वासन दिया। अलवर के सभी कार्यकर्ताओं का उत्साह देखते ही बनता था। बैठक में सर्वश्री अमरमुनि जी वानप्रस्थ, श्री प्रदीप आर्य, पं. शिवकुमार कौशिक, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, श्री वेद प्रकाश आर्य सहित कई महिला कार्यकर्ताओं ने अमूल्य सुझाव देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

18 जनवरी को सीकर में स्थित विद्या भारती स्कूल के प्रांगण में प्रभावशाली पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें स्वामी आर्यवेश जी, सत्यव्रत सामवेदी जी ने जनचेतना यात्रा के मुद्दों पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। विशेष बात यह रही कि सभी पत्रकारों ने इन मुद्दों को सामयिक एवं शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वसुधैव कुटुम्बकम् का स्वप्न देखा था भगत सिंह ने

सरदार भगत सिंह के क्रान्तिकारी रूप से देश ही नहीं, सारी दुनिया परिचित है लेकिन वह एक उच्च कोटि के लेखक और विचारक भी थे, यह बात हर कोई नहीं जानता। देशप्रेम, समाजोत्थान और मानवता के संदर्भ में भगतसिंह के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने उनके अपने दौर में थे। देशभक्ति पूर्ण लेखों से जनमानस को प्रेरणा देने वाले भगतसिंह ने बलवंत सिंह छद्मनाम से कलकत्ता से प्रकाशित 'मतवाला' पत्र में 'विश्व-प्रेम' नाम का एक ओजपूर्ण लेख लिखा था जिसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा पर विचार करते हुए उसके आधार पर किस तरह से विश्वबंधुत्व कायम किया जा सकता है, इस पर बल दिया गया है। प्रस्तुत हैं लेख के संपादित अंश — सम्पादक

'वसुधैव कुटुम्बकम!' जिस कवि सम्राट की यह अमूल्य कल्पना है, जिस विश्व प्रेम के अनुभवी का यह हृदयोद्गार है, उसकी महत्ता का वर्णन करना मनुष्य शक्ति से सर्वथा बाहर है।

विश्वबंधुता! इसका अर्थ मैं तो समस्त संसार में समानता के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझता। कैसा उच्च है यह विचार ! सभी अपने हों। कोई पराया न हो। कैसे सुखमय होगा वह समय, जब संसार से परायापन सर्वथा नष्ट हो जाएगा। जिस दिन यह सिद्धांत समस्त संसार में व्यावहारिक रूप में परिणत होगा, उस दिन संसार को उन्नति के शिखर पर कह सकेंगे। जिस दिन प्रत्येक मनुष्य इस भाव को हृदयंगम कर लेगा, उस दिन–उस दिन संसार कैसा होगा? जरा इसकी कल्पना करो तो!

उस दिन इतनी शक्ति होगी कि शांति–शांति की पुकार भी शांति भंग न कर सकेगी। उस दिन भूख लगने पर रोटी के लिए किसी को चिल्लपों मचाने की आवश्यकता नहीं हुआ करेगी। व्यापार उस दिन उन्नति के शिखर पर होगा। फ्रांस और जर्मनी में व्यापार के नाम पर घोर युद्ध न हुआ करेंगे। उस दिन अमेरिका और जापान दोनों होंगे परन्तु उनमें पूर्वी और पश्चिमीपन न होगा। काले–गोरे उस दिन भी होंगे परन्तु अमेरिकावासी वहां के काले निवासी को जीते–जी जला न सकेंगे। शांति होगी मगर पीनल कोड की आवश्यकता न होगी। अंग्रेज भी होंगे और भारतवासी भी, परन्तु उस समय उनमें गुलाम और शासक का भाव न होगा। उस दिन महात्मा टॉल्स्टॉय के रेजिस्ट नॉट दि ईविल (बुराइयों का प्रतिकार मत करो) वाले सिद्धांता की उच्च ध्वनि न लगाने पर भी संसार में बुराइयां नजर न आएंगी। उस समय होगी पूर्ण स्वतंत्रता। कैसा होगा वह समय? जरा कल्पना करो।

वर्तमान दशा को देखकर कौन कह सकता है कि ऐसा समय भी आ सकता है, जिस समय किसी के भय से नहीं, परन्तु अपने हृदय की प्रेरणा से ही मनुष्य पाप–कर्म नहीं करेंगे। यदि उस दिन भी हमें किसी कल्पित स्वर्ग की लिप्सा होगी तो हम कह देंगे कि स्वर्ग कोई दूसरी वस्तु है ही नहीं! क्या वह समय आ सकता है? यह एक बड़ी समस्या है। इसका उत्तर देना कोई सुगम कार्य नहीं है। परन्तु मैं पूछता हूँ कि क्या लोग उस समय को लाना चाहते हैं? वह लोग जो विश्वबंधुता का घोर नाद किया करते हैं, क्या वास्तव में उसे लाने के इच्छुक हैं? हां, कह देने से ही काम नहीं चलेगा।... प्रश्न गंभीरतापूर्वक विचार करने योग्य है। क्या लोग उसके लिए बलिदान देने के लिए तैयार हैं? उस कल्पित भविष्य के लिए हमें घोर वर्तमान देना होगा। उस हवाई किले के लिए हमें सर्वस्व देना होगा।... उस सुखमय जीवन के लिए नहीं–नहीं, उसकी आशा मात्र के लिए मर मिटना होगा। क्या लोग उसके लिए तैयार हैं?

हमें प्रचार करना होगा समता–समानता का। अत्याचार करना होगा उन पर जो उससे इनकारी हों। अराजकता फैलानी होगी उन राज्य साम्राज्यों के स्थान पर, जो शक्तिमद से अंधे होकर करोड़ों की पीड़ा का कारण हो रहे हैं। क्या लोग उसके लिए तैयार हैं। हमें समस्त संसार को उस सिद्धांत के स्वागत के लिए तैयार करना होगा। उस आशामयी खेती के लिए हमें खेतों में से सब कुछ उखाड़ फेंकना होगा कांटेदार झाड़ियों को उखाड़कर ज्वाला की शांति के लिए मटियामेट कर देना होगा। रोड़ा कंकड़ पीस डालना होगा। हमें घोर परिश्रम करना होगा।... अत्याचार का सर्वनाश करना होगा। पराधीनता को मिट्टी में मिला देना होगा क्योंकि यह अपनी कमजोरी के कारण उस मनुष्य जाति को, जिसकी सृष्टि परमपिता ने अपने ही अनुरूप की थी, न्यायपथ से भ्रष्ट करने का प्रलोभन दे रहा है।...

आये! कौन माता का लाल सच्चे हृदय से विश्वबंधुता का इच्छुक है। कौन है समस्त संसार के लिए अपना सुख बलिदान करने वाला? कोई गुलाम जाति इस उच्चतम सिद्धांत का नाम तक लेने की अधिकारिणी नहीं है। एक गुलाम मनुष्य के मुख से निकलकर इसका महत्व ही जाता रहता है। अपमानित मनुष्य, पददलित मनुष्य, पैरों तले रौदें जाने वाला मनुष्य यदि कहे– 'मैं विश्वबंधुता का अनुगामी हूँ, युनिवर्सल ब्रदरहुड का पक्षपाती हूँ, इसलिए इन अत्याचारों का प्रतिकार नहीं करता तो उसका कथन क्या मूल्य रखता है? कौन सुनेगा उसके इस कायरतापूर्ण वाक्य को? हां, तुममें शक्ति हो, तुममें बल हो, चाहो तो बड़े–बड़ों को पैरों तले रौद सको, एक इशारे पर बड़े–बड़े अभिमानियों को मिट्टी में मिला सको, तख्ते ताजवालों को खाक में सुला सको, उनको धूलि में मिला सको और फिर यह वाक्य कहते हुए कि 'हम विश्वप्रेमी हैं', ऐसा ने करो तो तुम्हारी बात वजनदार होगी–फिर तुम्हारा एक–एक वाक्य प्रभावशाली होगा। फिर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' भी महत्वपूर्ण हो जाएगा।

...जब तक काला–गोरा, सभ्य–असभ्य, शासक–शासित, धनी– निर्धन, छूत–अछूत आदि शब्दों का प्रयोग होता है, तब तक कहां विश्व बंधुता और विश्वप्रेम?यह उपदेश स्वतंत्र जातियां कर सकती हैं। भारत जैसी गुलाम जाति इसका नाम नहीं ले सकती। फिर उसका प्रचार कैसे होगा? तुम्हें शक्ति एकत्र करनी होगी। शक्ति एकत्र करने के लिए अपनी एकत्रित शक्ति खर्च कर देनी पड़ेगी। राणा प्रताप की तरह आयुपर्यंत ठोकरें खानी पड़ेंगी, तब कहीं उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकोगे। देखते नहीं, विश्वबंधुता का सच्चा प्रचारक था मेजिनी, जो बीस वर्ष स्वयं ही एक जगह बंद रहता है। लेकिन था उसका पक्षपाती–असहनीय कष्ट सहन किये थेउसने। विश्वबंधुता का अनुगामी जॉर्ज वाशिंगटन था– अमेरिका का मुक्ति प्रदाता। फ्रांस के क्रांतिकारी नेता थे कट्टर पक्षपाती–कितना रूधिर उन्होंने बहा दिया था। आदर्शवादी ब्रूट्स था विश्वप्रेमी, जिसने अपनी जन्मभूमि के लिए अपने परम प्रिय सीजर को अपने हाथों कतल कर डाला था और पीछे स्वयं भी आत्महत्या कर ली थी। सानंद युद्धों में प्रवीण रहने वाला गैरीबाल्डी था, जिसे विश्वप्रेमी होने का श्रेय प्राप्त हो सकता है। विश्वप्रेमी वह वीर है, जिसे भीषण विप्लववादी, कट्टर अराजकतावादी कहने में हम लोग तनिक भी लज्जा नहीं समझते–वही वीर सावरकर, विश्व प्रेम की तरंग में आकर घास पर चलते–चलते रुक जाते कि कोमल घास पैरों तले मसल जाएगी।.. विश्वप्रेम की देवी का उपासक था गीता रहस्य का लेखक पूज्य लोकमान्य तिलक।... अरे! रावण और बाली को मार गिराने वाले रामचंद्र ने अपने विश्वप्रेम का परिचय दिया था भीलनी के जूठे बेरों को खाकर।चचेरे भाइयों में घोर युद्ध करवा देने वाले संसार से अन्याय को सर्वथा मिटा देने वाले कृष्ण ने परिचय दिया अपने विश्वप्रेम का सुदामा के कच्चे चावलों को फांक जाने में। तुम भी विश्वप्रेम का दंभ भरते हो! पहले पैरों पर खड़ा होना सीखो। स्वतंत्र जातियों में अभिमान के साथ सिर ऊँचा करके खड़े होने के योग्य बनो। जब तक तुम्हारे साथ कामागाटामारू जहाज जैसे दुर्व्यवहार होते रहेंगे, जब तक डैम, काला मैन कहलाओगे तब तक तुम्हारे देश में जलियांवाले बाग जैसे भीषण हत्याकांड होते रहेंगे। जब तक वीरांगनाओं का अपमान होगा और तुम्हारी ओर से कोई प्रतिकार न होगा; तब तक तुम्हारा यह ढोंग कुछ मानी नहीं रखता। कैसी शांति, कैसा सुख और कैसा विश्वप्रेम?

यदि वास्तव में चाहते हो, कि संसारव्यापी सुख शांति और विश्वप्रेम का प्रचार करो तो पहले अपमानों का प्रतिकार करना सीखो। माँ के बंधन काटने के लिए कट मरो। बंदी मां को स्वतंत्र करने के लिए आजन्म कालेपानी में ठोकरें खाने को तैयार हो जाओ। सिसकती मां को जीवित रखने के लिए मरने को तत्पर हो जाओ। तब हमारा देश स्वतंत्र होगा। हम बलवान होंगे। हम छाती ठोककर विश्वप्रेम का प्रचार कर सकेंगे। संसार को शांति पथ पर चलने को बाध्य कर सकेंगे।

('भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज' पुस्तक से साभार)

जानने, मानने और सत्कार करने योग्य मात्र 33 देवता हैं

– स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

आर्य समाज लाजपत नगर, नई दिल्ली में रविवारीय सत्संग में प्रवचन करते हुए स्वामी जी ने यजुर्वेद अ.–14 के मन्त्र 20 के अनुसार अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, वसवः (पृथ्वी, आकाश), रुद्र (10 प्राण व जीवात्मा) आदित्य (12 माह) मरुतः (अन्य प्राणी), विश्वेदेवा (विद्वान संन्यासी), बृहस्पति (ब्रह्म), इन्द्र (विद्युत), वरुण (जल) को ही चर–अचर दिव्यगुण सम्पन्न परम हितकारी देवता बतलाया। मिथ्या कल्पित पाषाणादि मूर्ति, चित्रों और गंगा आदि तीर्थों को देवता मानना व पूजना अज्ञानता के अंधकार में धकेलने वाला और कष्टकारी कहा। स्वामी जी ने स्त्री व पुरुष के गुणों को विस्तार से समझाते हुए ज्ञान पूर्वक अपने–अपने कर्त्तव्यों को निष्ठापूर्वक करने को सुख का कारण बताया।

शान्ति पाठ के साथ प्रवचन समाप्त हुआ। आगन्तुकों को स्वादिष्ट जलपान कराके विदा किया। धर्माधिकारी पं. मेघश्याम आचार्य और समाज के पदाधिकारियों का सहयोग सराहनीय रहा। **— विजय आर्य, प्रधान, आर्य समाज, लाजपतनगर, नई दिल्ली**

राष्ट्रं में देहि- मुझे राष्ट्र प्रदान करो

– पू. स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

आज का भारत राष्ट्र, जो कभी विश्व में सर्वोच्च शिखर पर था, अर्थात् चक्रवर्ती राज्य के संचालन का केन्द्र बिन्दु था, वहीं आज एक प्रकार से सब राष्ट्रों में निम्न स्तर पर, नहीं तो, बहुत नीचे चला गया है। वहां भी, हमारा इतना अधः पतन हो चुका है कि पहचानना भी कठिन हो गया है कि क्या यह वही सार्वभौम शक्ति का केन्द्र भारत है? जो विश्व के सभी मानवों को एक सन्देश, एक आदेश देकर सबको सूत्रबद्ध एवं सुसम्बद्ध बनाए रखता था। हमारे इस अधःपतन का कारण क्या हम यह मान लें कि अब यहां के नागरिकों के अन्दर बल, बुद्धि, तेज, शौर्य, पराक्रम की न्यूनता हो गई है।

जब हम गहराई से इस विषय पर विचार करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि ऐसा कोई भी दोष या न्यूनता यहां के निवासियों में नहीं आई है। ना ही, प्राकृतिक रूप से इसमें कुछ न्यूनता आई है क्योंकि यहां की अपार प्राकृतिक सम्पदा को देखकर एवं साथ ही यहां की विपन्नता को देखकर किसी मनीषी विद्वान् ने ठीक ही कहा है यह समृद्ध भिखारी देश है अर्थात् प्राकृतिक सम्पदाओं का अकूत भण्डार इसके पास है किन्तु फिर भी विश्व में यह विपन्न देश है। विद्वानों की यह धारणा शत प्रतिशत सत्य है। भारतवर्ष प्राकृतिक सम्पदा से परिपूर्ण है। सजल नदियां, पर्वत, विविध प्रकार की औषधि वनस्पतियों से परिपूर्ण अरण्य, विविध रत्नों से परिपूर्ण भूगर्भ सम्पदा, वृष्टि, जलवायु, उर्वरा भूमि आदि इसकी परिपूर्णता के सूचक हैं। क्या कुछ है, जो भारतवर्ष के पास नहीं है? किन्तु फिर भी वही परिणाम विपन्नता का। अन्ततः इसकी विपन्नता का कारण क्या है? क्या इसके अन्दर संगठन की कमी है? ऐसा भी नहीं कह सकते। महाकुम्भ के पर्वों पर एकत्रित होने वाला जन समूह सम्पूर्ण विश्व के किसी भी आयोजन या संगठन को चुनौती देता रहा है और भविष्य में देता रहेगा। पुनः इसका अधोपतन क्यों हुआ? हुआ ही नहीं अपितु आज भी हो रहा है।

मध्यकाल से लेकर अर्वाचीन काल तक हमारे जितने भी योद्धा, नेता, बुद्धिमान आचार्य हुए हैं वे सभी अपने-अपने क्षेत्र में अद्वितीय रहे हैं किन्तु अन्त में परिणाम क्या निकलता है? वही आशा के विपरीत हमारा पराभव। इस विषय में विहंगम दृष्टि से सभी घटना चक्रों पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि जो लोग इतनी प्रतिभा, शक्ति, नेतृत्व के धनी थे, उनके द्वारा राष्ट्र को पराभव का मुख क्यों देखना पड़ा? इस पर बहुत मन्थन करने के पश्चात् एक स्पष्ट कारण परिलक्षित होता है। वह है- राष्ट्रीय भावना का अभाव।

विदेशियों की अपेक्षा अपने भारत राष्ट्र के लोगों के अन्दर (कुछ अपवादों को छोड़कर जिनके साहस, शौर्य, पराक्रम के बल पर आज तक हम जीवित हैं) राष्ट्रीय भावना का अभाव या न्यूनता रही है। विदेशियों की, चाहे वे आक्रान्ता रहे हों या व्यापारी, यह विशेषता रही है कि परस्पर में उनका लाख मतभेद होने पर भी यदि कोई राष्ट्रीय समस्या आ जाती है, तो वे सब मतभेदों को विस्मृत कर दूसरे राष्ट्र के समक्ष एक हो जाते हैं, और शत्रु का मिलकर सामना करते हैं। भारतवासियों की विशेषता यह रही है (जो आज भी है) कि राष्ट्रीय संकट के समय विस्मृतप्रायः समस्याओं या मतभेदों को उठाने का स्वर्णिम अवसर मानते हैं एवं उन पुरानी बातों को बड़े जोर-शोर के साथ उठाते है। और आसन्न संकट को भूलकर आपस में ही एक दूसरे से लड़ना-झगड़ना प्रारम्भ कर देते हैं, वह भी प्रतिशोध की भावना से।

आसन्न भूत के दो ज्वलन्त उदाहरण इस बात को पुष्ट करने के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन पर, जब वे राष्ट्रपति पद पर आसीन थे, न्यायालय की अवमानना को लेकर विपक्ष ने महाभियोग का मुकदमा चला रखा था और परिस्थिति यह थी कि कभी भी बिल क्लिंटन राष्ट्रपति पद से च्युत होकर न्यायालय के द्वारा दण्डित हो कारागार में जा सकते थे। किन्तु उसी समय अमेरिका का ईराक के साथ आंशिक युद्ध प्रारम्भ हो गया। जो विपक्षी दल क्लिंटन को महाभियोग के द्वारा पद्च्युत एवं दण्डित करना चाहता था, उसी ने यह कहकर कि अमेरिका राष्ट्र आज शत्रु देश से संघर्ष कर रहा है, इसलिए इस समय यह महाभियोग चलाना ठीक नहीं, महाभियोग वापस ले लिया और क्लिंटन बच गए। यद्यपि राजनीति प्रेक्षकों तथा विशेषज्ञों का मानना है कि महाभियोग से बचने के लिए ईराक पर आक्रमण करना बिल क्लिंटन की सोची समझी नीति थी। हम इस गहराई में नहीं जाना चाहते, जो भी हो राष्ट्र के नाम पर सारा अमेरिका अपने मतभेदों को भुलाकर एक हो गया। किन्तु दूसरी तरफ हम अपने इस भारतवर्ष की ओर देखें तो हमें दुःखद आश्चर्य होता है। जब पाकिस्तान के साथ कारगिल युद्ध चल रहा था। शत्रु देश ने छद्म आक्रमण किया था, उस संकटापन्न स्थिति में विपक्ष द्वारा चीनी घोटाले का विषय बड़े घटाटोप रूप में उठाना और सरकार को अपदस्थ करने का पूर्ण प्रयास करना तथा जन-जन में इस घोटाले को अतिरिंजित कर प्रस्तुत करना, जिससे राष्ट्र सुरक्षा से ध्यान हटाकर नागरिकों का सामान्य विषय पर ले आना। (यद्यपि वास्तविक रूप में चीनी घोटाला हुआ ही नहीं था किन्तु संकट के समय में सरकार को सहयोग देने के स्थान पर उसे चोट देने का प्रयास कितना बड़ा राष्ट्रघात व गर्हित कृत्य है।) कितना अन्तर है राष्ट्रीय भावना में, हममें तथा विदेशियों में। एक ओर राष्ट्र के नाम पर महाभियोग समाप्त करना और राष्ट्रीय संकट आने पर विपक्ष द्वारा झूठा आरोप गढ़कर सरकार को संकट के घेरे में डालना और शत्रु का मनोबल बढ़ाना। यह प्रवृत्ति आज से नहीं अपितु महाभारत युद्ध के बाद से ही हमारे राष्ट्र के अन्दर घर कर गई थी। शक, हूण, यवन, पुर्तगालियों, अंग्रेजों के साथ युद्ध या संवादों में हमारे में से कुछ लोगों ने संकट के समय अपनो का साथ छोड़कर आक्रान्ताओं का साथ दिया। अपने राष्ट्र के लिए जो सर्वस्व समर्पण कर युद्ध या शत्रु का ह्रास कर रहे थे हममें से बहुत से लोग उनका ही पूर्ण शक्ति से विरोध कर रहे थे, उन राष्ट्रभक्तों के ह्रास के लिए पूर्णरूपेण सहयोग कर रहे थे। पोरस रहे या दाहिर; पृथ्वीराज रहे या महाराणा प्रताप; छत्रपति शिवाजी रहे या तिलक; या सुभाष चन्द्र बोस। इन सभी को विदेशी शक्तियों की अपेक्षा अपने राष्ट्र के लोगों के साथ संघर्ष करना पड़ता था। क्या आम्भी, मानसिंह, जयसिंहादि के सहयोग के बिना हमारे राष्ट्र के शूरवीर कभी शत्रु के सम्मुख पराभव का मुंह देख सकते थे? क्या झांसी की रानी, नाना साहब, तात्यां टोपे, सुभाषचन्द बोस, चन्द्रशेखर आजाद राष्ट्रीय भावना से रहित अपने ही लोगों के विश्वासघात के कारण पूर्णरूप से राष्ट्रहित के कार्य करने में असफल सिद्ध नहीं हुए? क्या ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे लोग भी अपने ही राष्ट्रीय भावना से रहित लोगों के द्वारा अनेकों बार संकट की परिस्थितियों में नहीं घिर गए थे? इतिहास के घटना चक्र हमें स्मरण दिला रहे हैं कि सब कुछ होते हुए भी अर्थात् साधनों से सम्पन्न होते हुए भी हमारी असफलता का कारण हमारे अन्दर उत्कृष्ट राष्ट्रीय भावना का अभाव ही है। ऐसे परिदृश्यों को देखकर ही व्यथित स्वर में श्री गुरुवर गोलवलकर ने एक बार कहा था- हमने अर्थात् अपने राष्ट्र के लोगों ने अंग्रेजों से अनेक अपकृत सीखें। यदि हम उनका एक उत्कृष्ट गुण राष्ट्रीय भावना भी सीख लेते तो आज भारत राष्ट्र के सम्मुख इतनी विकट समस्याएं नहीं होती और भारत राष्ट्र भी एक समुन्नत देश होता। कितना मार्मिक सत्य है। मानव के आदि धर्मशास्त्र वेद में जहां अनेक प्रकार की प्रार्थनाओं, आदेशों, उपदेशों संदेशों एवं आख्यानों के माध्यम से मनुष्य जीवन के उत्थान के लिए अनेक स्वर्णिम निर्देश दिए गए हैं, वहीं राष्ट्र के हित के लिए भी प्रार्थना की गई है। यजुर्वेद में तो स्पष्ट ही कहा गया है- हे परमात्मन्! तुम राष्ट्र के प्रदान करने वाले हो, मुझे राष्ट्र प्रदान करो। राष्ट्रं में देहि (यजु. 10/2/3) अर्थात् राष्ट्रीय भावना से मुझे ओतप्रोत कर दो। अथर्ववेद में तो एक स्थल पर कहा है- हे ब्रह्मणस्पते! हम लोगों को राष्ट्र रक्षा के लिए बढ़ाएं-

अभीवर्त्तेन मणिना येनेन्द्रो अभिवावृधे।
तेनास्मान् ब्रह्मणस्पते अभिराष्ट्राय वर्धय।।
अथर्व. 1/29/1

राष्ट्र एवं राष्ट्रभूमि के प्रति मातृभावना के पुनीत भाव से भावित होने के लिए अथर्ववेद के 12वें काण्ड में अनेकत्र प्रार्थना की गई है-

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।
अथर्व 12/1/12

कावयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।
अथर्व 12/1/62

माता पुत्राय में पय।
अथर्व 12/1/10 आदि आदि।

आजकल भारत राष्ट्र में एक विचित्र प्रकार के बुद्धिजीवियों का वर्ग उत्पन्न हो गया है जो राष्ट की चर्चा चलने पर ही सहसा यह कहने लगता है कि हमें तो यह भी नहीं पता कि राष्ट्र किसे कहते हैं? राष्ट्र तो एक क्षुद्र भावना का प्रतीक शब्द है। यद्यपि इस प्रकार का उनका कथन एक प्रवंचना मात्र होता है। क्योंकि पाश्चात्य विद्वानों को ही प्रत्येक विषय में प्रमाण मानने वाले भद्र जनों ने पाश्चात्य विद्वानों द्वारा राष्ट्र शब्द की, की गई परिभाषा को अवश्य पढ़ा होगा। पुनरपि वे भारत राष्ट्र की चर्चा चलने पर परिहास क्यों करते हैं? इन तथाकथित विद्वानों में से तो कई यह कहने में भी संकोच नहीं करते कि भारत कभी राष्ट्र था ही नहीं। लोग ग्रामों, उपनगरों या अधिक से अधिक महानगरों तक ही सीमित थे। उनके विचार से जब राष्ट्र था ही नहीं तो राष्ट्रीय भावना का विकास कैसे होता? राष्ट्रीयता भी विदेशियों द्वारा ही हमें प्राप्त हुई है। प्राचीन काल में भारत के लोग राष्ट्र शब्द से सर्वथा अपरिचित थे। उनका इस प्रकार का कथन प्रमत्त प्रलाप से अधिक महत्व नहीं रखता। क्योंकि विश्व के सर्वाधिक प्राचीन साहित्य वेद में अनेक स्थलों पर राष्ट्र शब्द का प्रयोग हुआ है और राष्ट्र की चर्चा की गई हैं। क्यों दूर जाएं? महाभारत काल पर भी दृष्टि डालें तो भीष्म पर्व में संजय द्वारा धृतराष्ट्र के सम्मुख भारतवर्ष का महात्म्य और उसकी विस्तृत सीमाओं का वर्णन हमें इसकी प्राचीनता और इसकी महिमा का स्पष्ट दिग्दर्शन कराते हैं, जो आधुनिक तथाकथित विद्वानों की समस्त शंकाओं का समाधान करने में सक्षम है। इतिहास से हमें शिक्षा लेकर पुनः वेद के शब्दों में प्रार्थना करनी चाहिए- राष्ट्रदा राष्ट्रं में देहि- हे परमात्मन्! तुम राष्ट्र के प्रदान करने वाले हो, मुझे राष्ट्र एवं राष्ट्र भावना प्रदान करो।

– आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ

वेदाधारित हो गणतन्त्र

जिसके अंकुर को सींचा था, अमर शहीदों ने शोणित से,
वही दिखायी अब पड़ते हैं, उत्पीड़ित से व शोषित से।
सभी जगह नीचे से ऊपर, व्याप्त हुआ है भ्रष्टाचार,
पतित हुआ है चरित्र राष्ट्र का, बढ़ा जा रहा अत्याचार।
सत्ताधारी शासक सारे, हुए स्वार्थ में अन्धे है,
स्वार्थपूर्ति के लिए उन्होंने, किए प्रदूषित धन्धे हैं।
सत्य धर्म ले रहा सिसकियां, दानवता हो गई विभोर,
डाँट रहा है अब सुजनों को, पापाचारी कलुषित चोर।
पश्चिम की आंधी ने कैसा, आज यहां कुहराम मचाया,
सत्य सनातन की संस्कृति को, इस धरती से आज उड़ाया।
टूट रहे परिवार हमारे, टूट रहा सम्पूर्ण समाज,
उग्रवाद के जालों में फंस, हुआ प्रकम्पित भारत आज।
सीमाएं भी आज देश की, नहीं रही सम्पूर्ण सुरक्षित,
लगा हुआ है आज दांव पर, भारत का सर्वोपरि हित।
विषम परिस्थितियों से होंगे, कैसे हम सब अब उन्मुक्त,
आओ करें विचार सभी हम, कैसे हो इनसे अब मुक्त।
एक मार्ग ही शेष बचा है, वैदिक पथ हम सब अपनाएं,
जिससे मानवता रक्षित हो, दानवता को दूर भगाएं।
महिमण्डल पर सर्वोपरि हो, भारत, फिर जागे वह मन्त्र,
जयी बने फिर से मानवता, वेदाधारित हो गणतन्त्र।

- राधेश्याम आर्य

पृष्ठ–1 का शेष

जयपुर, अलवर, सीकर, झुंझुनू, चिड़ावा एवं पिलानी में किया गया सघन जन–सम्पर्क

संवेदनशील बताते हुए समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी बताया तथा इसमें सक्रिय सहयोग देने का आश्वासन दिया। इस पत्रकार वार्ता का आयोजन निजी शिक्षण संस्था संघ के श्री रतन सिंह पिलानिया विद्या भारती पब्लिक स्कूल के निदेशक श्री बलवन्त सिंह तथा उनके अन्य सहयोगियों ने आयोजित करवाया। श्री रतन सिंह जी ने कहा कि मई में होने वाली जन–चेतना यात्रा के अवसर पर छात्रों की रिकार्ड तोड़ रैली निकाली जायेगी। पत्रकार वार्ता से पूर्व सभा प्रधान एवं अन्य सभी नेता सीकर में लोकसभा सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती से भेंट करने के लिए उनके पिपराली स्थित वैदिक आश्रम में गये।

सीकर से जन–सम्पर्क के इस दौरे का अगला पड़ाव झुंझुनू में खाना खजाना होटल में पत्रकार सम्मेलन के रूप में आयोजित किया गया। जहाँ सैकड़ों कार्यकर्ताओं, पत्रकारों एवं झुंझुनू के गणमान्य महानुभावों के भोजन की भी व्यवस्था की गई थी। यह सारी व्यवस्था झुंझुनू की सांसद श्रीमती संतोष अहलावत के पति श्री सुरेन्द्र सिंह अहलावत के सौजन्य से की गई थी। पत्रकार सम्मेलन में श्री सुरेन्द्र सिंह अहलावत, श्री सज्जन सिंह, श्री विजय लायल, श्री नवरंग आर्य, श्री गुलजारी लाल आदि ने भावी यात्रा के लिए तन–मन–धन से सहयोग देने का आश्वासन दिया। चिड़ावा में वीर सावरकर शिक्षण संस्थान में आयोजित प्रबुद्ध लोगों की संगोष्ठी में स्वामी आर्यवेश जी, श्री सत्यव्रत सामवेदी जी, श्री बिरजानन्द जी ने अपने ओजस्वी विचार रखते हुए जन–चेतना यात्रा के लिए सहयोग की अपील की। इस कार्यक्रम का मंच संचालन श्री लीलाराम यादव ने किया तथा आगन्तुक नेताओं का चिड़ावा की जनता की ओर से वरिष्ठ एडवोकेट श्री धर्मपाल सिंह जी ने स्वागत किया। श्री रणवीर सिंह थालौर ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। इस अवसर पर श्री लीलाधर शर्मा, श्री जयनारायण आर्य, श्री हरिचन्द्र

सिंह–व्याख्याता, श्री हजारी लाल डांगी, श्रीमती रेखा शर्मा तथा श्रीमती विमला आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया। रात्रि पड़ाव विरला यात्री निवास पिलानी में हुआ।

19 जनवरी, 2016 को प्रातः 10 से 1 बजे तक विरला यात्री निवास के विशाल सभागार में युवाओं का शानदार सम्मेलन राजस्थान सभा के प्रधान श्री हवासिंह आर्य एडवोकेट के कुशल संयोजन में आयोजित किया गया जिसे श्री बिरजानन्द, श्री हवासिंह आर्य, श्री धर्मपाल सिंह एडवोकेट, श्री सत्यव्रत सामवेदी तथा स्वामी आर्यवेश जी ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम के उपरान्त पत्रकार वार्ता भी आयोजित की गई।

अपने इस संक्षिप्त तूफानी दौरे में सभी स्थानों पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट किया कि प्रजातंत्र में दो सत्ताएं काम करती हैं – एक राजसत्ता तथा दूसरा लोकसत्ता या यूं कह सकते हैं कि एक है राज्यशक्ति दूसरी है लोकशक्ति। राज्यशक्ति के ऊपर लोकशक्ति का अंकुश यदि न रहे तो राज्यशक्ति निरंकुश हो जाती है और जनता विभिन्न समस्याओं का दंश झेलने के लिए मजबूर होती है। अतः नशाखोरी, कन्याभ्रूण हत्या, गोहत्या एवं गोमांस निर्यात, अश्लीलता एवं युवकों का नैतिक पतन, धार्मिक अन्धविश्वास, किसानों द्वारा आत्महत्याएं एवं लार्ड मैकाले द्वारा स्थापित शिक्षा नीति आदि समस्याओं के विरुद्ध जनता को जागृत करके लोकशक्ति को संगठित करना और राज्यशक्ति पर दबाव बनाकर उपरोक्त समस्याओं का समाधान करना इस जन–चेतना यात्रा का उद्देश्य है। स्वामी जी ने पूरे देश के आर्यों का आह्वान किया कि अब आर्य समाज को उपरोक्त ज्वलन्त समस्याओं को लेकर आम जनता के बीच अपनी आवाज उठानी होगी और किंकर्त्तव्यविमूढ़ जनता का मार्गदर्शन करते हुए उसे नेतृत्व देना होगा। इसी से सारे देश की जनता आर्य समाज के झण्डे के नीचे एकत्रित हो जायेगी।

आर्य समाज सिडको औरंगाबाद द्वारा आयोजित ज्ञानयज्ञ चर्चा सत्र की चौतरफा सराहना

आर्य समाज सिडको औरंगाबाद द्वारा आयोजित चारों दिवसीय ज्ञानयज्ञ चर्चा सत्र को बहुत अच्छा प्रतिसाद मिला। इस कार्यक्रम में दर्शनयोग महाविद्यालय के संचालक स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक ने विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन किया।

सुखी गृहस्थ जीवन, चरित्रवान संतान निर्माण, कर्मफल सिद्धान्त व जीवन में तनाव इत्यादि विषयों पर दार्शनिक विचार व्यक्त किए गये। चार दिवसीय कार्यक्रम सिडको एन–4 स्थित वंजारी मंगल कार्यालय हनुमान चौक में किया गया।

सुखी गृहस्थ जीवन – अनित्य को नित्य समझना, अशुद्ध को शुद्ध समझना, दुःखों के कारणों को सुख समझना, अनात्मा को आत्मा समझना ये चार दुःखों के मूल कारण है। इसी अज्ञान के कारण मनुष्य दुःखी रहता है। मिथ्या ज्ञान अथवा अज्ञान तो दुःखों के मूल कारण है। इसलिए वास्तविक ज्ञान के जरिए ही खुशी मिलती है। एक अपेक्षा पूरी हुई की दूसरी सामने आती है, उसको पूरा करने के लिए इन्सान प्रयासरत रहता है आवश्यक और कम आशा रखने से इन्सान सुखी होता है।

सुखी जीवन के लिए पांच महायज्ञ करना जरूरी है। परिवार में संध्या, उपासना, अतिथि सत्कार, प्राणी मात्र पर दया, माता–पिता की सेवा, गुरुजन व विद्वानों की वंदना। पर्यावरण की शुद्धता के लिए हवन इत्यादि सुखी गृहस्थ जीवन के लिए आवश्यक है।

चरित्रवान संतान – अपनी आने वाली अगली पीढ़ी को बुद्धिमान कर्त्तव्यदक्ष व चरित्रवान और राष्ट्रप्रेमी बनाने के लिए माता–पिता, दादा–दादी इत्यादि घर के लोगों को एक साथ बैठकर घर में अच्छे विचार प्रसारित करना चाहिए। बच्चों के सामने झूठ बोलना, लड़ाई झगड़े नहीं होने चाहिए। अच्छे विचार की बाते माता–पिता करते हैं तो बच्चे अच्छे संस्कारित होते हैं। बच्चे 80 प्रतिशत देखके सीखते हैं और 20 प्रतिशत कान से सुनकर सीखते हैं, यह ध्यान में रखना चाहिए।

कर्मफल सिद्धान्त – मानव जीवन कर्मयोनी है। ईश्वर ने मानव को कुशाग्र बुद्धि व काम करने के लिए दो हाथ दिये हैं। अच्छा कर्म करने पर मानव की उन्नति होती है उसका फल अच्छा मिलता है। बुरा काम करने पर इन्सान को दुःख मिलता है उसका फल अच्छा नहीं होता। इन्सान को कर्म करने का स्वातंत्र हैं और ईश्वर ने सब प्राणी मात्र से अलग कुशाग्र बुद्धि दी है। जीवन में उत्तम कार्य करना और अच्छा फल प्राप्त करना यही सुखी जीवन का रहस्य है। जो जैसा कर्म करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा यह ईश्वर नियम है।

ताण–तनाव – जीवन में तान–तनाव से बचने के लिए दिन के 24 घण्टे नियोजन करना जरूरी है। जीवन में इच्छायें सीमित रखें, कई बार हम छोटी–छोटी चीजों पर तनाव में आ जाते हैं। कई बार हम ऐसी चीजों के लिए तनाव करते हैं, जिसे हम बदल नहीं सकते। ऐसे समय "कोई बात नहीं" ये तीन शब्द बोलकर तनाव से छुटकारा पायें।

कार्यक्रम की सफलता के लिए सिडको आर्य समाज के प्रधान मोहन देशमुख, उपप्रधान डॉ. गिरधर करंजगावकर, डॉ. सुजाता करंजगावकर, मंत्री जगदीश सूर्यवंशी, संरक्षक एडवोकेट शिवाजीराव शिंदे आचार्य विवेक अन्तरंग सदस्य दत्तात्रय मुले, चारुशिला सूर्यवंशी, डॉ. प्रो. प्रतिभा शिंदे, एडवोकेट, मीरा बीरादार, गारखेड़ा आर्य समाज के प्रधान प्रा. रमेश ठाकुर, मंत्री डॉ. लक्ष्मण माने, कोषाध्यक्ष सौ. ज्योति तोष्णीवाल इत्यादि ने अथक परिश्रम किया।

इस दौरान स्वामी सम्यक कांतिवेश डॉ. विज्ञानमुनि, पं. शिवमुनि, बीदर के पं. गणेश देव आर्य का मंत्री जगदीशसूर्यवंशी ने सत्कार किया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन डॉ. सुजाता करंजगावकर ने किया, सुभाष वेद पाठक ने आभार माना।

– जगदीश सूर्यवंशी, मंत्री

23 जनवरी जयन्ती पर विशेष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी एवं कुशल महानायक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

यह उसी वीर इतिहास पुरुष की अनुपम अमर कहानी है।
जो रक्त कणों से लिखी गई, जिसकी जय हिन्द निशानी है।।
प्यारा सुभाष, नेता सुभाष, भारत भू का उजियारा था।
पैदा होते ही गणिकों ने जिसका भविष्य लिख डाला था।।

"भारतवर्ष भगवान का बहुत ही प्रिय स्थान रहा है। यहाँ भगवान ने युग–युग में अवतार लेकर पाप से बोझिल धरती का उद्धार किया है और भारत के लागों के हृदय में धर्म तथा सत्य की स्थापना की है। आज हमारी मातृभूमि विदेशी विधर्मी पापियों की दासता में जकड़ी हुई है। माँ आप मुझे आशीष दें कि भारत भूमि की मुक्ति के लिए कुछ कर सकूँ।" उपर्युक्त शब्द सन् 1913 ई. में सुभाष चन्द्र बोस ने 16 वर्ष की आयु में अपनी माँ प्रभावती को एक पत्र में लिखे थे। इन पंक्तियों में सुभाषचन्द्र बोस के भीतर का राष्ट्रप्रेम बोल रहा था। सुभाषचन्द्र बोस का यह राष्ट्रप्रेम क्रांतिकारी आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित था।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ सशक्त रूप से बगावत का परचम लहराने वाले क्रांतिकारी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म माघ वदी, कृष्ण पक्ष, तिथि पंचमी, विक्रम सम्वत् 1954, शनिवार, 23 जनवरी, सन् 1897 ई. को उड़ीसा प्रान्त के कटक नामक नगर में हुआ था। इनके पिता "रायबहादुर" जानकी दास बोस वहाँ के नगरपालिका एवं जिला बोर्ड के प्रधान तथा प्रसिद्ध सरकारी वकील अैर समाज के बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इनकी माता प्रभावती देवी धार्मिक विचारों वाली समझदार घरेलू माहिला थीं। परिवार में सुख–सुविधा के लगभग सभी साधन उपलब्ध थे। अंग्रेज सरकार ने जानकी दास को "रायबहादुर" का खिताब दिया था। जानकी दास तथा प्रभावती की कुल 14 संतानें थीं, जिसमें 6 बेटियाँ तथा 8 बेटे थे। सुभाषचन्द्र बोस उनकी नौवीं संतान और पांचवें बेटे थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा कटक के रेशे गांव के कालेजिएट स्कूल से हुई तथा कलकत्ता के स्काटिश चर्च कालेज से बी.ए. आनर्स की डिग्री प्राप्त की थी। सुभाषचन्द्र बोस बाल्यकाल से ही प्रतिभावान छात्र थे। 15 सितम्बर, 1919 ई. में इंग्लैण्ड के कैम्ब्रिज कालेज से तैयारी करके आई.सी.एस. (भारतीय प्रशासनिक सेवा) की परीक्षा उत्तीर्ण की और जिसमें उन्होंने चौथा स्थान प्राप्त किया। 22 अप्रैल, 1921 ई. में अंग्रेजी गुलामी न सहने के कारण भारतीय सचिव ई.एस. मान्टेग्यू को त्याग पत्र दे दिया। किन्तु माँ के इस पत्र के मिलते ही कि – "पिता, परिवार के लोग या अन्य कोई कुछ भी कहें उन्हें अपने बेटे के इस फैसले पर गर्व है।" सुभाषचन्द्र बोस जून 1921 में मानसिक एवं नैतिक विज्ञान में आनर्स की डिग्री के साथ अपने देश वापस आ गये।

सुभाषचन्द्र बोस, रवीन्द्र नाथ टैगोर की सलाह से सर्वप्रथम बम्बई जाकर मणि भवन में स्थित महात्मा गाँधी से मिले। वहाँ 20 जुलाई, सन् 1921 ई. को गाँधी और सुभाषचन्द्र बोस के बीच पहली मुलाकात हुई। गाँधी जी के अनुसार चितरंजन दास बाबू के साथ काम करने को कहा और देशबन्धु चितरंजन दास को सुभाषचन्द्र ने अपना गुरु माना। दास बाबू उन दिनों कलकत्ता के महापौर थे, तब उन्होंने सुभाषचन्द्र बोस को महानगर पालिका का प्रमुख अधिकारी बनाया। उसी समय सुभाषचन्द्र बोस ने कलकत्ता के रास्तों का अंग्रेजी नाम बदलकर भारतीय नाम रखा। सन् 1928 ई. में जब साइमन कमीशन भारत आया, तब इसका जवाब देने के लिए कांग्रेस का भावी संविधान बनाने का काम आठ सदस्यीय आयोग को सौंपा। मोतीलाल नेहरू इस आयोग के अध्यक्ष तथा सुभाषचन्द्र बोस उसके एक सदस्य थे। 26 जनवरी, 1931 ई. को कलकत्ता में राष्ट्रध्वज फहराकर एक विशाल मोर्चे का नेतृत्व कर रहे थे तभी पुलिस ने उन पर लाठी चलाकर घायल कर दिया और जेल भेज दिया तब गाँधी जी ने अंग्रेज सरकार से समझौता किया और सभी कैदियों को रिहा करवा दिया। किन्तु सरदार भगत सिंह की फांसी माफ कराने के लिए गाँधी जी ने अंग्रेजी सरकार से नरमी के साथ बात की। अन्त में भगत सिंह को फांसी हो गई। भगत सिंह को न बचा पाने के कारण सुभाषचन्द्र बोस गांधी जी और कांग्रेस के तरीकों से नाराज हो गये।

सुभाषचन्द्र बोस को अपने सार्वजनिक जीवन में कुल 11 बार कारावास हुआ। 5 नवम्बर, सन् 1925 ई. को देशबन्धु चितरंजनदास जी का देहान्त होने की खबर माण्डले की जेल में रेडियो पर सुनी तब उन्हें बहुत दुःख हुआ। सन् 1930 ई. में सुभाषचन्द्र बोस जेल में ही थे कि चुनाव में उन्हें महापौर चुना गया इसलिए सरकार को उनको रिहा करना पड़ा। सन् 1933 ई. से लेकर 1936 ई. तक सभाषचन्द्र बोस यूरोप में रहे। सन् 1938 ई. में सुभाषचन्द्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये, तब उनका स्वागत 51 बैलों द्वारा खींचे गये रथ में किया गया। भगत

सिंह को फांसी से न बचा पाने से 29 अप्रैल, 1939 ई. को सुभाषचन्द्र बोस ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दिया। स्वतन्त्रता संग्राम में अत्यधिक सक्रियता के कारण अंग्रेज सरकार ने सन् 1940 ई. में उन्हें घर में ही नजर बन्द कर दिया।

जब कलकत्ता की अदालत में मुकदमा पेश होना था, तभी 16 जनवरी, 1941 ई. को वे पुलिस को चकमा देकर एक पठान मौ. जियाउद्दीन के वेश में अपने बड़े भाई शरद बाबू के बेटे शिशिर बोस की सहायता से अपनी गाड़ी से ही घर से निकल गये। गोमेह रेलवे स्टेशन से फ्रंटियर मेल पकड़कर वे पेशावर पहुंचे। पेशावर में वे फारवर्ड ब्लाक के एक सहकारी मियां अकबर शाह से मिले। मियां अकबर शाह ने भगत राम तलवार से मिलाया तथा मिलकर वे काबुल की ओर निकल पड़े, और काबूल से निकल रूस की राजधानी मास्को होते हुए बर्लिन पहुँचे तथा जर्मनी की तत्कालीन तानाशाह हिटलर से मिले और भारत को स्वतन्त्र कराने की सहायता माँगी।

सन् 1937 ई. में अपनी सेक्रेटरी आस्ट्रियन युवती एमिली शैकी से शादी की तथा एक अनीता बोस नाम की बेटी हुई, जो वर्तमान में जर्मनी में परिवार सहित रहती है।

यहीं पर इन्होंने आजाद हिन्द रेडियो की स्थापना की और यहीं से सुभाष बाबू नेताजी सुभाषचन्द्र बोस कहलाने लगे। **21 अक्टूबर, 1943 ई. को सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज या इंडियन नेशनल आर्मी की स्थापना की और इस संगठन के प्रतीक चिन्ह एक झण्डे पर दहाड़ते हुए बाघ का चित्र बनाया और जयहिन्द का नारा दिया। "कदम–कदम बढ़ाये जा खुशी के गीत गाये जा।"** इस संगठन का यह गीत था, जिसे गुनगुना कर संगठन के सेनानी जोश से भर उठते थे। इस संगठन को कुल नौ देशों ने मान्यता दी।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आजाद हिन्द फौज के प्रधान सेनापति बन गये। आजाद हिन्द फौज के कारण भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। इस फौज में न केवल अलग–अलग सम्प्रदाय के सेनानी शामिल थे, बल्कि इसमें महिलाओं का भी रेजीमेन्ट था। आजाद हिन्द फौज में जापानी सेना से अंग्रेजी फौज से पकड़े हुए भारतीय युद्ध बन्दियों को भर्ती किया गया था।

3 जून, 1943 ई. को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस पनडुब्बी द्वारा जापान होते हुए पूर्व एशिया पहुँचे और बर्मा में नेताजी ने अनेक भाषण करके वहाँ के स्थानीय भारतीय लोगों से आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने तथा आर्थिक मदद करने का आह्वान किया और उन्होंने अपने आह्वान में यह संदेश दिया कि – **"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"** इस तरह से द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान आजाद हिन्द फौज ने अपनी जापानी सेना के सहयोग से भारत पर आक्रमण किया। अपनी फौज को प्रेरित करने के लिए नेताजी ने "दिल्ली चलो" का नारा भी दिया। दोनों फौजों ने अण्डमान निकोबार द्वीप जीत लिया, पर अन्त में अंग्रेजों का पलड़ा भारी पड़ा और आजाद हिन्द फौज को पीछे हटना पड़ा। "दिल्ली चलो" का नारा 5 जुलाई, 1943 ई. को नेताजी ने सिंगापुर के टाउन हाल के सामने सुप्रीम कमाण्डर के रूप में दिया था।

6 जुलाई, 1944 ई. को रंगून में आजाद हिन्द रेडियो पर अपने भाषण के माध्यम से गांधी जी को सम्बोधित करते हुए नेताजी ने जापान से सहायता लेने का अपना कारण और आजाद हिन्द फौज की स्थापना के उद्देश्य के बारे में बताया। इस भाषण के दौरान नेताजी ने गांधी जी को सर्वप्रथम राष्ट्रपिता बुलाकर अपनी जंग के लिए आशीर्वाद मांगा। इस प्रकार नेताजी ने गांधी जी को सर्वप्रथम राष्ट्रपिता बुलाया।

द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान की हार के बाद नेताजी को नया रास्ता ढूंढ़ना जरूरी था। उन्होंने रूस से सहायता मांगने का निश्चय किया। 18 अगस्त, 1945 ई. को नेताजी हवाई जहाज से मंचूरिया (टोकियो) की तरफ जा रहे थे। इस सफर के दौरान वे लापता हो गये। इस दिन के बाद वे कभी किसी को दिखाई नहीं दिये। 23 अगस्त, 1945 ई. को टोकियो रेडियो ने बताया कि 18 अगस्त को टोकियो जाते समय ताइवान के पास विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया जिसमें भाद्रपद सुदी, शुक्ल पक्ष, तिथि पंचमी, विक्रम सम्वत् 2002, शनिवार, 18 अगस्त, 1945 ई. को 48 वर्ष की आयु में नेताजी ने अन्तिम सांस ली। इनकी मृत्यु पर अभी भी सन्देह बना हुआ है।

भारत के स्वाधीनता के पुजारी, त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति एवं कुशल महानायक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भारत माता की आजादी के लिए अपना सर्वस्व अपार योग्यता और कार्यशक्ति मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया। ऐसे कर्मवीर, राष्ट्रभक्त एवं कुशल महानायक को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

– संकलनकर्ता–सन्तलाल मिश्रा, कोषाध्यक्ष, आर्य केन्द्रीय सभा महानगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश,
मो.:–9910485362

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 37 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी व स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में
डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व डॉ. जयेन्द्र आचार्य के ब्रह्मत्व में
वायु प्रदुषण व पर्यावरण की शुद्धि के लिए

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 5, 6, 7 फरवरी 2016 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान: अजमल खाँ पार्क, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जन जागरण शोभा यात्रा - शुक्रवार 5 फरवरी 2016, प्रात: 10:30 बजे

रूट: अजमलखाँ पार्क से चलकर फैज रोड, मॉडल बस्ती, ईस्ट पार्क रोड, डोरीवालान, देशबन्धु गुप्ता मार्ग, लिबर्टी सिनेमा, देवनगर, बीडनपुरा, आर्य समाज रोड़, करोल बाग, मास्टर पृथ्वीनाथ मार्ग होते हुए अजमल खाँ पार्क में दोपहर 1:30 बजे समापन। संयोजक- गोपाल जैन, वागीश ईस्सर, राहुल पंगासा, राकेश भटनागर, देवेन्द्र भगत, सुशील आर्य, योगेन्द्र शास्त्री, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, संजीव आर्य, सुरेश आर्य, राकेश आर्य, अनिल मित्तल, आदित्य आर्य, वेदप्रकाश आर्य, संतोष शास्त्री, वीरेश आर्य, प्रवीन आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, ब्र. दीक्षेन्द्र, यज्ञवीर चौहान, विकास गोगिया, जयवीर राणा, देवेन्द्र आर्य

मुख्य यजमान : सर्वश्री दर्शन अग्निहोत्री, डॉ. रिखबचन्द जैन, राजीव 'परम', कीर्ति शर्मा, राकेश ग्रोवर

शुक्रवार 5 फरवरी, 2016

यज्ञ	: प्रात: 8.30 से 9.30
विराट शोभा यात्रा	: प्रात: 10.30 से 1.30
वेद-संस्कृत रक्षा सम्मेलन	: दोपहर 2.30 से 5.30
भव्य संगीत संध्या	: रात्री 7.00 से 9.00

श्री नरेन्द्र आर्य "सुमन"
श्री रामनिवास आर्य (पानीपत), श्री अंकित उपाध्याय

शनिवार 6 फरवरी, 2016

101 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रात: 9 से 10.30
ध्वजारोहण	: प्रात: 11.00 बजे
आर्य युवा सम्मेलन	: 11.30 से 2.00
आर्य महिला सम्मेलन	: 2.30 से 5.00
व्यायाम शक्ति प्रदर्शन	: 5.00 से 6.00
गौ-राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	: 7.00 से 9.00

रविवार 7 फरवरी, 2016

151 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रात: 9 से 11.00
ध्वजारोहण	: प्रात: 11.15 बजे
राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	: 11.30 से 2.30
शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन	: 2.30 से 5.00
कार्यकर्ता सम्मान समारोह	: 5.00 से 5.30
धन्यवाद एवम् शांतिपाठ समापन	: सायं 5.45 बजे

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 25 जनवरी 2016 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। सम्पर्क: श्री आदर्श कुमार-9811440502, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री-9810884124
2. यजमान बनने के इच्छुक अपना यज्ञकुण्ड 25 जनवरी 2016 तक प्रदीप गोगिया-8800550785, कमल आर्य-9953995003, माधव सिंह आर्य -8882445109, ऋषिपाल शास्त्री-9891148729, अनिता कुमार-9999699510, जयप्रकाश शास्त्री-9810897878 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा "केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली" के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी, मसाले आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक

डॉ. अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष
महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय महामंत्री
दुर्गेश आर्य
राष्ट्रीय मंत्री
धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

यशोवीर आर्य, रामकुमार सिंह, कृष्णचन्द पाहूजा, सत्यभूषण आर्य, विश्वनाथ आर्य, स्वतंत्र कुकरेजा, आनन्दप्रकाश आर्य, रामकृष्ण शास्त्री
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

आनन्द चौहान, प्रभात शेखर, मायाप्रकाश त्यागी, नवीन रहेजा, अरूण बंसल, अविनाश बंसल, ओमप्रकाश जैन, वैद्य इन्द्रदेव

चौ. लाजपराय आर्य, अमरनाथ गोगिया, नफेसिंह देसवाल, मुंशीराम सेठी, प्रि0 अन्जु महरोत्रा, योगराज अरोड़ा, सुरेन्द्र गुप्ता, हरिमोहन शर्मा, बब्बु
स्वागत अध्यक्ष

प्रदीप तायल, रवि चड्डा, मनोहरलाल चावला, रामलुभाया महाजन, ओम सपरा, ब्रह्मप्रकाश मान, डॉ. ओमप्रकाश मान, सोमनाथ आर्य
स्वागत मन्त्री

सुरेन्द्र कोहली, गायत्री मीना, पी.के. मित्तल, केवलकृष्ण सेठी, रणसिंह राणा, रविदेव गुप्ता, सुभाष चांदला, प्रेमपाल शास्त्री
स्वागत समिति

स्वागत समिति : सर्वश्री जितेन्द्र डावर, राजेश मेहन्दीरत्ता, चत्तरसिंह नागर, विनोद कद, रमेश कुमारी भारद्वाज, धर्मदेव खुराना, डॉ. आर.के. आर्य, अन्जु जावा, सुरेन्द्र शास्त्री, नीता खन्ना उर्मिला आर्या, अर्चना पुष्करणा, शीला ग्रोवर, पुष्पलता वर्मा, कै. अशोक गुलाटी, लक्ष्मी सिन्हा, विजय सचदेवा, आदर्श सहगल, सुदेश अरोड़ा, सरोजनी दत्ता, विजयारानी शर्मा, राजेन्द्र लाम्बा महेश खण्डेलवाल, हरिओम दलाल, हरिचन्द स्नेही, तेजपालसिंह आर्य, वेदप्रभा बरेजा, प्रवीन तायल, सुभाष बब्बर, प्रकाशवीर शास्त्री, महेन्द्र मनचन्दा, गजेन्द्र आर्य, डॉ. गजराजसिंह आर्य।

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9810117464, 9312406810, 9810756571
E-mail: aryayouthn@gmail.com **Website:** www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

आर्य समाज की गतिविधियाँ

काशी शास्त्रार्थ स्मृति वैदिक महोत्सव सोत्साहपूर्वक सम्पन्न

आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड में आयोजित 146वें वार्षिक शास्त्रार्थ स्मृति के अवसर पर गत वर्षों की भांति तीन दिवसीय वैदिक महोत्सव 21 नवम्बर से प्रारम्भ होकर 23 नवम्बर को सोत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। महोत्सव को डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे शास्त्री लातूर (महाराष्ट्र) स्वामी केवलानन्द जी, डॉ. माधुरी रानी, श्री शिवनारायण सिंह गौतम, श्रीमती सुनीता शास्त्री रेवाड़ी ने अपने प्रभावशाली व्याख्यानों तथा स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी, श्री रविन्द्र कुमार आर्य व बाल गायक सोमेन्द्र आर्य ने अपने ओजस्वी व मधुर भजनों द्वारा वैदिक सिद्धान्तों एवं महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में वाराणसी के महापौर श्री रामगोपाल मोहले, विधायक श्री रविन्द्र कुमार जायसवाल, अन्तर जनपदीय सांस्कृतिक निदेशक डॉ. रत्नेश वर्मा, भाजपा महानगर अध्यक्ष श्री प्रदीप अग्रहरी जी ने अपने उपस्थिति से समारोह को गरिमा प्रदान की तथा महर्षि दयानन्द के कार्यों पर विस्तृत व्याख्यान दिया।

इस अवसर पर पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने डॉ. लोखण्डे जी के आर्य सामाजिक लेखन व्याख्यान एवं एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में अन्य सामाजिक सेवा आदि रचनात्मक कार्यों को देखते हुए उनका सहृदय स्वागत किया तथा जिला सभा वाराणसी द्वारा उनके सम्मान में अभिनन्दन पत्र व स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। इस ऐतिहासिक शास्त्रार्थ स्थल पर डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी की नवरचित पुस्तक "दयानन्दोक्त औषधि आरोग्य सूत्र" का विमोचन पी. सी. एस. अधिकारी डॉ. रत्नेशवर्मा के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

वैदिक महोत्सव के तीनों दिन पाणिनी महाविद्यालय के आचार्य संजीवनी आर्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ व वेद पाठ ब्रह्मचारिणियों द्वारा सम्पन्न हुआ।

महोत्सव के अन्तिम दिवस 'वेद प्रचार सप्ताह' के आयोजन में संलग्न भोजूबीर, चिरईगांव मुगलसराय, चन्दौली, चितईपुर, काजीसराय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा लल्लापुर की आर्य समाजों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया तथा वेद प्रचार में सक्रिय भूमिका प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं का माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं आभार प्रधान श्री अजीत कुमार आर्य तथा मंच संचालन मंत्री श्री प्रमोद आर्य व उपप्रधान श्री वेद प्रकाश वृजवासी ने किया। अतिथियों का स्वागत श्री सत्येन्द्र आर्य, श्री शशिकान्त आर्य, श्री अनन्त लाल, श्री प्रमोद कुमार आर्य, श्री प्रदीप आर्य ने किया।

– प्रमोद आर्य, मंत्री

मानसरोवर महिला आर्य समाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

जयपुर : महिला आर्य समाज मानसरोवर ने 20वाँ वार्षिकोत्सव 25 से 29 नवम्बर, 2015 तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ के साथ मनाया। ब्रह्मा की भूमिका निभाई कन्या गुरुकुल हाथरस की प्राचार्या डॉ. पवित्रा आर्य ने, वेदपाठ किया जयपुर की श्रीमती श्रुति शास्त्री और गुरुकुल की कन्याओं ने।

प्रतिदिन दो सत्रों में चले कार्यक्रम को परवान चढ़ाया मेरठ के भजनोपदेशक संदीप आर्य ने ढोलक वादक सोनू के साथ। स्थानीय श्रीमती श्रुति शास्त्री एवं सुधा मित्तल पं. यादराम के भजन भी सराहे गए। सभी सत्रों की अध्यक्षता श्रीमती कुसुमबाला 'तपेन्द्र' ने एवं कुशल संचालन प्रो. सुमित्रा आर्या ने किया।

समापन सत्र में प्रधान श्रीमती सरोज कामरा ने प्रगति विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् कार्यकारिणी के साथ यज्ञ की ब्रह्मा एवं वेदपाठिनियों का सत्कार किया।

जयपुर के आर्य जगत की उपस्थिति के साथ गणमान्य एम.एल. गोयल, अशोक शर्मा, आचार्य उषबुर्द्ध पं. भगवान सहाय विद्या वाचस्पति तथा सन्दीपन आर्य व यशपाल 'यश' ने भी समारोह की शोभा बढ़ाई। पौराणिक जगत में भी अनुकूल संदेश गया। मंत्री सुधा मित्तल के आभार ज्ञापन एवं ऋषि लंगर के साथ समागम विसर्जित हुआ।

– ईश्वर दयाल माथुर

समाज उपमंत्री की दुर्घटना में दर्दनाक मौत – अन्त्येष्टि सम्पन्न

जयपुर : 21 अक्टूबर, आर्य समाज जयपुर दक्षिण के उपमंत्री योगेन्द्र सोनी की रविवार को दुर्घटना ग्रस्त होने से आज एम. एम. एस. अस्पताल में मृत्यु हो गई।

सोनी का अन्तिम संस्कार मान सरोवर स्वर्ण पथ श्मसान घाट में सम्पन्न हुआ। अन्तिम संस्कार में यशपाल 'यश' डी. के. गुप्ता (प्रधान) यादरामआर्य, अजुर्न देव कालरा (प्र. मा. स.) डॉ. सुभाष गुप्ता सहित अनेक आर्य समाजों के व्यक्ति, मित्र, परिजन व रिश्तेदार सम्मिलित हुए। सोनी भजन गायक यज्ञ प्रेमी रहे।

– ईश्वर दयाल माथुर

चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ सम्पन्न आर्य समाज नेमदार गंज (नवादा) बिहार द्वारा

दिनांक 29 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक चतुर्वेद शतकम महायज्ञ सह मगध प्रमण्डलीय आर्य महासम्मेलन पूरी भव्यता से सम्पन्न हो गया जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री हरिशंकर जी अग्निहोत्री (आगरा) मन्त्रपाठ हाथरस की बहन सुश्री रामकुमारी जी आर्ष वेदमणि एवं सुश्री वन्दना (सूरत) द्वारा सम्पन्न हुआ। 29 नवम्बर को अपरान्ह 2 बजे से राष्ट्रीय कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी (दिल्ली), आचार्य श्री उमाशंकर जी शास्त्री योग आचार्य डॉ. श्री राधाकान्त सिंह नेचुरोपैथ –समस्तीपुर के नेतृत्व में स्थानीय विद्यालयों, शिक्षण संस्थानों के छात्र–छात्राओं प्राचार्यों शिक्षकों, अभिभावकों सामान्य जन, आगत अतिथि विभिन्न आर्य समाजों के जागरूक एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं की भव्य शोभायात्रा निकाली गई जिसमें रास्ते में ऊँचे भवनों से होती पुष्प वृष्टि ने तथा स्थान–स्थान पर स्वागत की व्यवस्था ने सबको हर्षित किया। पूरे गांव में वैदिक धर्म की जय का नाद गुंज उठा। शोभा यात्रा समापन पर राष्ट्रीय कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी द्वारा 'ओ३म्' ध्वज का उच्च दण्ड पर उत्तोलन किया गया। दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन श्री रमेन्द्र गुप्ता जी, उपप्रधान श्री ज्ञानेश्वर शर्मा जी द्वारा विधिवत किया गया। उपस्थित आचार्यों, डी. ए. वी. के प्राचार्यों एवं शिक्षकों का शॉल एवं मोमेन्टो देकर सम्मानित किया गया। विशिष्ट अतिथियों के सम्मान अवसर पर रिसुआ विधानसभा के सदस्य श्री अनिल सिंह जी ने भी उपस्थित होकर उत्साहवर्द्धन किया। चतुर्वेद शतकम महायज्ञ में यजमान दम्पत्तियों ने चारों दिवस सहभागिता निभाई। मन्दिर निर्माण की अपील पर स्थानीय प्रबुद्ध आर्यों ने दान की घोषणा की। दिल्ली के सम्मानीय सारस्वत मोहन मनीषी जी ने तत्काल 2100/– रुपये का दान देकर प्रतिस्पर्द्धा प्रारम्भ कर दी।

विश्व शान्ति महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर फरीदकोट का वार्षिक महोत्सव एवं विश्वशांति महायज्ञ दिनांक 4 से 6 दिसम्बर, 2015 को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न किया गया, इस महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्र देव शास्त्री जी एवं वक्ता स्वामी ब्रह्मवेश जी महाराज–पटियाला, सुन्दर भजनों की प्रस्तुति के लिए अलका आर्या ग्रेटर नोएडा से पधारी, आचार्य चन्द्रदेव जी उच्च कोटि के वक्ता व वेदों के मूर्धन्य विद्वान हैं उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी व तर्क व प्रमाणों के द्वारा श्रोतागणों को निहाल कर दिया सभी श्रोता आचार्य जी के विद्वत्व की भूरि–भूरि प्रशंसा कर रहे थे। आचार्य जी ने ईश्वर यज्ञ, देश भक्ति, न्याय व्यवस्था, कुरीतियां इत्यादि विषयों पर तीनों दिन बृहत एवं शोध युक्त व्याख्यान दिया। स्वामी ब्रह्मवेश जी ने भी अपने प्रवचनों से सबको आनन्दित किया। बहन अलका आर्या जी भी अपने भजनों व उपदेशों के द्वारा जनता को मन्त्र मुग्ध करती रही। वार्षिक महोत्सव व विश्व शांति महायज्ञ का कार्यक्रम बड़ा ही उत्साहवर्द्धक रहा। इस महोत्सव में यज्ञ पर फरीदकोट के गणमान्य व्यक्तियों को यजामन बनाया गया।

इस कार्यक्रम में स्वामी श्री निवास जी महाराज कोटकपूरा से पधारे उन्होंने अपने उद्बोधन में समाज की बुराईयों पर प्रकाश डाला और कहा कि आज का युवा वर्ग अपनी सभ्यता व संस्कृति को भूलता जा रहा है। आर्य समाज मंदिर मोगा के श्री सत्य प्रकाश उप्पल जी ने सभी का उत्साहवर्द्धन किया व इस कार्यक्रम के संयोजक पं. कमलेश कुमार शास्त्री के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि शास्त्री जी अपनी कर्मठता के साथ इस समाज को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं।

इस अवसर पर श्री सतीश कुमार शर्मा जी द्वारा गणमान्य व्यक्तियों को सम्मानित किया। लोगों ने सत्संग सुनकर अपने जीवन को सम्मानित किया। इस वार्षिक महोत्सव में बाहर से आने वाले मेहमानों के लिए ठहरने व भोजन की उचित व्यवस्था की गई थी।

इस अवसर पर श्री ललित बजाज आर्य समाज कोटकपूरा, श्री सत्य प्रकाश उप्पल श्री पं. दिवाकर भारती आर्य समाज मोगा, श्री ओम प्रकाश ग्रोवर, पं. कुणाल किशोर आर्य समाज जीरा, श्री नवीन कुमार हिमाचल प्रदेश व आर्य समाज मानसा से लोगों ने आकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया।

– सतीश कुमार शर्मा, मंत्री आर्य समाज मंदिर, फरीदकोट, पंजाब

मुम्बई में आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के संरक्षण में आर्य वीर दल मुम्बई ने "आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर" का आयोजन रविवार दिनांक 15 नवम्बर से रविवार दिनांक 22 नवम्बर, 2015 तक आर्य समाज सांताक्रुज में उत्साहपूर्वक किया गया।

यज्ञ के उपरान्त शिविर का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण शिविराध्यक्ष श्रीमती यशबाला गुप्ता एवं महिला आर्य समाज सांताक्रुज की संयोजिका श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री के करकमलों से हुआ।

इस शिविर की मुख्य शिक्षिका सुश्री सुव्रती आर्या देहरादून गुरुकुल एवं ज्योति आर्या बागपत मेरठ थी। मुम्बई के सभी आर्य समाजों के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लेते हुए कन्याओं का उत्साहवर्धन किया।

"आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर" के अन्तर्गत शारीरिक, आत्मिक व बौद्धिक उन्नति के लिए आर्य वीर दल मुम्बई ने अनेकों विदुषी महिलाओं को आमंत्रित करके विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन दिया।

दिनांक 22 नवम्बर, 2015 को शिविर के समापन के कार्यक्रम में सबसे पहले वैदिक राष्ट्र गीत आ ब्रह... का पाठ किया तत्पश्चात् सुन्दर भजनों का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसके बाद शिविरार्थियों ने सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमिनमस्कार, नियुद्धम, जूडो कराटे, योगासन, स्तूप, रस्सा मल्लखम्भ, स्केटिंग शूटिंग इत्यादि का प्रदर्शन बहुत ही शानदार रहा जिसकी सभी दर्शकों ने बहुत प्रशंसा की। इस पूरे कार्यक्रम का संचालन दल के संचालक नरेन्द्र शास्त्री ने कुशलतापूर्वक किया।

आर्य समाज सांताक्रुज के महामंत्री एवं शिविर संरक्षक श्री संगीत आर्य ने कन्याओं को शिविर में भेजने के इस निर्णय के लिए सभी माता पिता को साधुवाद दिया।

आर्य वीरांगना दल मुम्बई की संचालिका श्रीमती जयाबेन पटेल ने कार्यक्रम की प्रशंसा की तथा तन–मन–धन से सहयोग के लिए सभी का धन्यवाद किया।

आर्य वीर दल मुम्बई के संचालक आचार्य नरेन्द्र शस्त्री ने सभी आर्य समाजों में नियमित शाखाएं लगाने की प्रेरणा दी। जिससे मुम्बई के आर्य परिवार के बच्चे वैदिक धर्म, सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कारों से अवगत हो सकें, आदर्श जीवन निर्माण की दिशा में अग्रसर हो सकें। इस शिविर में दल के कोषाध्यक्ष श्री ज्ञानप्रकाश आर्य एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री कल्पेश आर्य का भी सराहनीय योगदान रहा।

आर्य वीर दल के शिक्षक आचार्य धर्मवीर जी, श्री सौरभ आर्य एवं श्री धर्मेन्द्र आर्य ने भी विशेष सहयोग प्रदान किया। आर्य वीर श्री धर्मेन्द्र आर्य मुम्बई को इंडियन योग फेडरेशन की ओर से योग रत्न की उपाधि से विभूषित किये जाने पर दल की ओर से स्वागत किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री अरूण अब्रोल ने कहा बच्चों को संस्कार के लिए किये गये अच्छे कार्यों में धन की कमी नहीं होने दी जायेगी।

शिविराध्यक्षा श्रीमती यशबाला गुप्ता ने शिविरार्थियों को अपनी शुभकामनाएं प्रदान की। धर्मधर आर्य महामंत्री आर्य वीर दल मुम्बई ने सभी के सहयोग को सराहा तथा सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। अंत में शांति पाठ एवं जयघोष हुआ, प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज, सैक्टर–6 भिलाईनगर का 56वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सैक्टर–6 भिलाई का त्रिदिवसीय 56वां वार्षिकोत्सव 18 से 20 दिसम्बर, 2015 को सम्पन्न हुआ। इसके साथ ही ऋग्वेद महायज्ञ का आयोजन भी किया गया था।

भारत के ख्याति प्राप्त विद्वानों ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इनमें 16 गुरुकुल आश्रमों के संचालक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, आचार्य अंशुदेव जी यज्ञ के ब्रह्मा दिल्ली से पधारे आचार्य विद्यादेव जी एवं देहरादून से भजनोपदेशक पं. सत्यपाल 'सरल' प्रमुख थे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ 18 दिसम्बर को झण्डा फहराकर आचार्य विद्यादेव जी के कर कमलों से हुआ। रोज प्रातः हवन, भजन एवं प्रवचन तथा सायं भजन एवं प्रवचन दो सत्रों में आयोजित किये गये। दोपहर में बच्चों के लिए "वैदिक धर्म एवं आर्य समाज" विषय पर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें डी.ए.वी. तथा आर्य समाज से सम्बद्ध 8 स्कूलों ने भाग लिया। बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया। अंतिम दिन पूर्णाहुति के पश्चात् गुरुकुल आश्रम आमसेना से आये ब्रह्मचारियों द्वारा योग एवं व्यायाम प्रदर्शन किया गया। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर एक कार्यक्रम सियान सदन, नेहरू नगर में आयोजित किया गया जिसमें भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री रवि आर्य एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रधान श्री जितेन्द्र प्रकाश सवहोत्रा ने किया।

– रवि आर्य, मंत्री आर्य समाज सैक्टर–6, भिलाई, जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़

प्रकाशन की तिथि : 21 जनवरी, 2016
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

प्रतिष्ठा में :–
ी जी
र्य प्रतिनिधि सभा
न रोड, नयी दिल्ली-१

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रकृति माता का अद्भुत चमत्कार

**एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे।
तं पाकेन मनसापश्यमन्तितस्तं माता रेहि स उ रेहि मातरम्।।**

—ऋ० १०/११४/४

ऋषिः–सध्रिर्वैरूपो घर्मो वा तापसः।। देवता–विश्वेदेवाः।। छन्दः–जगती।।

विनय–संसार में आया हुआ जीव क्या है? यह एक सुपर्ण पक्षी है जो अन्तरिक्ष–समुद्र में विहार करने आया हुआ है। यह अपने ज्ञान और कर्म के पंखों से इधर–उधर उड़ता हुआ इस सब भुवन को विविध प्रकार से देखने का आनन्द ले–रहा है। संसार–सागर में मनोमयादि सूक्ष्म संसारान्तरिक्ष में एक योनि से दूसरी योनि में भोग भोगने के लिए फिरता हुआ और वहां विविध प्रकार के भगों को प्राप्त करता हुआ यह जीव गति कर रहा है, उड़ रहा है। अभी तक जीव को मैं इसी संसाराकाश के विकारी सुपर्ण के रूप में देखता रहा हूँ, पर आज समीपता से देखा है, ज्ञानपरिपक्व हुए मन से इसे समीपता से देख रहा हूँ, तो इस जीव–प्रकृति–संयोग को मैं और ही रूप में देख रहा हूँ कि माता उसे चूम रही है और वह माता को चाट रहा है। प्राकृति माता मैं कहूंगा परमेश्वरी प्रकृति–जीव से प्रेम कर रही है और जीव इस माता से सुख पा रहा है। जीव के प्रकृति से जुड़ने का, जीव के संसार में आने का यही रहस्य है। कई ऋषि कहते हैं कि जीव और प्रकृति का संयोग लूले और अन्धे का संयोग है, पर यह बात शायद परमेश्वरहीन प्रकृति के विषय में होगी। परमेश्वरी प्रकृति तो अन्धी नहीं है। मुझे तो यह सम्बन्ध माता और पुत्र का लगता है। इसलिए यह सम्बन्ध केवल भोग में नहीं किन्तु अपवर्ग में (अपवर्ग के भोग में) भी बना रहता है। पुत्र माता के बिना नहीं रह सकता और माता पुत्र को चाहती है। ऋषि ने ठीक कहा है "पृथिवी सब भूतों को मधु है और सब भूत पृथिवी को मधु हैं।" वास्तव में दोनों एक–दूसरे से सुख पा रहे हैं और एक–दूसरे को सुख दे रहे हैं। क्या हम ही प्रकृति से सुख पाते हैं और प्रकृति हमसे सुख नहीं पाती? नहीं। तनिक प्रकृति को बेजान मत समझो, प्रकृति को "परमेश्वर की प्रकृति" के रूप में देखो।

शब्दार्थ–एकः सुपर्णः=एक सुपर्ण पक्षी है **सः**=वह **समुद्रम्**=इस संसारान्तरिक्ष के समुद्र में **आविवेश**=आया है **सः**=वह **इदं विश्वं भुवनम्**=इस सम्पूर्ण संसार को **विचष्टे**=विविध प्रकार से देखता है, इसका मज़ा लेता है, परन्तु **तम्**=उसे **पाकेन मनसा**=परिपक्व ज्ञानवाले मन से **अन्तितः**=समीपता से **अपश्यम्**=देखा है तो मैं देखता हूँ कि **तम्**=उसे **माता**=माता **रेहि**=चूम रही है **सः उ**=और वह **मातरम्**=माता को **रेहि**=चाट रहा है।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

अर्धकुम्भ मेला 2016 के अवसर पर
सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में
विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन एवं पाखण्ड-खण्डिनी पताका का आरोहण
20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक

पूर्व वर्षों की भांति अर्धकुम्भ मेला हरिद्वार में जनवरी, 2016 से प्रारम्भ होगा। इस अवसर पर विभिन्न मठ, मंदिर एवं धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पंडाल सजेंगे। अतः सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल की संयुक्त बैठक में यह निश्चय किया गया है कि 20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक इस अवसर पर हरिद्वार मे आने वाली धर्म पारायण जनता को धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत कराने के लिए एवं नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, मांसाहार एवं धार्मिक अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों से दूर रहने का संकल्प दिलाने के लिए तथा वेद प्रचार के माध्यम से ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप समझाने के लिए एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सम्मेलन योग साधना शिविर तथा नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन-चेतना रैली आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर जहाँ आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, भजनोपदेशक एवं कार्यकर्ता जनता का मार्ग दर्शन करेंगे वहीं देश के कोने-कोने से आर्यजन अपनी-अपनी समाजों के बैनर लेकर शिविर में भाग लेंगे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द की परम्परा को जीवित रखते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका का आरोहण भी किया जायेगा जो मेले में विशेष आकर्षण का कार्य करेगी। आप सभी से निवेदन है कि अभी से मेले में आने का मन बना लें तथा इस महत्त्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से तथा अपनी समाज की तरफ से अधिक से अधिक धनराशि तथा खाद्य सामग्री (दाल, चावल, आटा, घी, चीनी, सब्जी आदि) दान स्वरूप देकर पुण्य के भागी बनें तथा वेद प्रचार के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान प्रदान करें। वेद प्रचार शिविर का विस्तृत कार्यक्रम बहुत शीघ्र आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है। अपना सहयोग या दान राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से अथवा **"सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के नाम भेजने की कृपा करें।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश – प्रधान-सार्व.सभा
स्वामी दिव्यानन्द – प्रधान वैदिक विरक्त मण्डल
स्वामी प्रणवानन्द – कोषाध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल
प्रो. विट्ठलराव आर्य – मंत्री-सार्व.सभा
पं. माया प्रकाश त्यागी – कोषाध्यक्ष-सार्व.सभा
गोविन्द सिंह भण्डारी – प्रधान-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड
सुखदेव वर्मा – कोषाध्यक्ष-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड
दयाकृष्ण काण्डपाल – मंत्री-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड
इं. प्रेम प्रकाश शर्मा – प्रधान, आर्य समाज देहरादून
डॉ. वीरेन्द्र पंवार – प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।